IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं में असुरक्षा की भावना का अध्ययन

[1]**प्रो. (डॉ.) रेखा गुप्ता** , [2]**श्रीमती रति रॉय**

[1]शोध निर्देशक, प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन
[2]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन

सारांश

बच्चे का बेहतर विकास उसके माता-पिता और शिक्षक के हाथों में ही होता है। यदि वह एक संयुक्त परिवार में रहते हैं तो उनके विकास में महत्वपूर्ण योगदान घर के बाकी सदस्यों का भी होता है परंतु महत्वपूर्ण कर्तव्य माता पिता को ही निभाना पड़ता है। ऐसे में माता-पिता को यह ध्यान रखना अति आवश्यक है कि उनके जीवन को कोई भी असुरक्षित असामाजिक तत्व आहत ना कर सके। क्योंकि बच्चों के विकास के दिनों में एक छोटी सी गलती उन बच्चों का आने वाला पूरा भविष्य खराब कर सकती है। यदि एक बार किसी बच्चे के दिलों दिमाग में असुरक्षा की भावना बैठ जाती है तो जीवन पर्यंत उसे उसके दिलो-दिमाग से दूर करना नामुमकिन हो जाता है। हम सभी कभी न कभी असुरक्षा की भावना का सामना करते हैं। छात्राओं की सुरक्षा अपने आप में ही बहुत बड़ा मुद्दा है। पिछले कुछ सालों में महिलाओं के प्रति बढ़ते अत्याचारों को देखकर हम यह तो बिल्कुल नहीं कर सुरक्षित है। महिलाए अपने आपको असुरक्षित महसूस करती है। हमारे देश में महिलाओं को मय में जीना पड़ रहा है, जिसको कम करने के लिए आत्मविश्वास में वृद्धि करना अति आवश्यक है।

कुंजी शब्द- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र, शासकीय सहशिक्षा, शासकीय एकल शिक्षा , असुरक्षा की भावना

प्रस्तावना

सह शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है, जिसमें बालक और बालिकाएं एक साथ एक ही विद्यालय में पढ़ते हैं तथा एक साथ एक समान पाठयक्रम पूरा करते है। जहां छात्र-छात्राओं को एक ही शिक्षण व्यवस्था तथा प्रशासन में शिक्षा ग्रहण करनी होती है। यह शिक्षा-व्यवस्था आधुनिक भारत में नवीन नहीं है। वैदिक काल में गुरू आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत गुरू कन्या के साथ अन्य विद्यार्थी भी शिक्षा ग्रहण किया करते थे। परन्तु उस समय गुरू के प्रति श्रद्धा, ब्रहा्रचर्य पालन, व्रत और संयम उन्हें भाई बहन के पवित्र सम्बंधों में ही बांधकर रखता था। इस प्रकार एक ही समय में एक संस्था के अधीन और एक ही छत के नीचे लड़के और लड़कियों को एक साथ शिक्षा देना सह-शिक्षा कहलाता है। हम सभी कभी न कभी असुरक्षा की भावना का सामना करते हैं; हमारा कोई कार्य सफल होगा या असफलता हाथ लगेगी इसका आंकलन करने का यह स्वाभाविक तरीका है। यदि आप किसी दुस्साहसिक काम करने या न करने पर निर्णय कर रहे हों तो यह

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

एक बहुत अच्छा गुण है। परन्तु रोजमर्रा के जीवन में, आप छोटे छोटे कामों को करने में भी असुरक्षित महसूस करते है, जैसे अपने दोस्तों से ईमानदारी से बात करना, तो इससे आप की अपने जीवन के आनंद उठाने की क्षमता कम हो जाती है। जीवन निरंतर परिवर्तनशील है और आज की कोई स्थाई चीज कल जा भी सकती है। पर यदि हम खुद को शक्तिशाली बनाते हैं, आप हमेशा चीजों का पुर्ननिर्माण कर सकते हैं, विजय पा सकते है, और अपनी मर्जी से आगे बढ़ सकतें है, और जहाँ भी हम जाएँ खुश रह सकतें है।

असुरक्षा की भावना

बच्चों का दिल बहुत कोमल होता है उनको जो भी सिखाया और समझाया जाता है भी जल्द ही उस बात को दिल और दिमाग में बैठा लेते हैं। जैसे अच्छी बातें बच्चे अपने दिल में बैठा लेते हैं वैसे ही कुछ बुरी बातें और और सुरक्षा से जुड़ी बातें भी बच्चे जल्द ही अपने दिलो दिमाग में बैठा लेते हैं। आज हम बात करेंगे बच्चों के दिलों दिमाग में बैठ जाने वाली और सुरक्षा और नकारात्मक भावनाओं के बारे में जो उनके आने वाले भविष्य से लेकर वर्तमान की परिस्थितियों में काफी गहरा प्रभाव डालती हैं।

यदि विशेषज्ञों की दृष्टि से देखा जाए तो बच्चों में असुरक्षा की भावना उनमें आत्मविश्वास की कमी के कारण उत्पन्न होती है। यदि सामान्य अर्थ में समझा जाए तो और सुरक्षा बच्चों के दिलों दिमाग में किसी भी चीज को लेकर हो सकती है। जैसे किसी व्यक्ति के साथ जुड़ना, किसी व्यक्ति के साथ बातचीत करना, अपने आसपास के माहौल के अनुसार चलना, अपने भविष्य को लेकर और असुरक्षित महसूस करना, अपनी किसी खराब या बुरी आदत को लेकर और सुरक्षित और भयभीत महसूस करना आदि। विशेषज्ञों के अनुसार सभी प्रकार की और सुरक्षा की भावना बच्चों के दिलों में तब उत्पन्न होती है, जब उनके आसपास कुछ और सामाजिक परिस्थितियां चल रही हो या फिर कुछ ऐसी तनावपूर्ण परिस्थितियों हो जिनको देखकर उनके दिमाग पर गलत असर पड़ता हो या फिर वे असुरक्षित महसूस करने लगते हो।

शोध उद्देश्य

सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के असुरक्षा की भावना का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

H_1 शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

H_2 शहरी क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

H_3 ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

परिसीमाएं

- प्रस्तुत शोध जबलपुर शहर तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों तक सीमित है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

समूह	छात्रों की संख्या N	मध्यमान Mean	मानक विचलन SD	मानक त्रुटि	t का मान	सार्थकता स्तर Sig. Value
						-05
शासकीय सहशिक्षा विद्यालय	150	99.83	31.26	3.48	0.89	सार्थक अंतर नहीं है
शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय	150	102.95	29.61			

- प्रस्तुत शोध शासकीय विद्यालयों की बालिकाओं तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध बालिकाओं की असुरक्षा की भावना के अध्ययन तक सीमित है।

उपकरण

शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उपकरण के रूप में, सुरक्षा असुरक्षा मापनी जो प्रोफेसर बीना शाह (HOD) एम. जे पी - रोहिलखंड युनिवर्सिटी (बरेली) द्वारा निर्मित हैं। इसमें कुल 75 कथन है।

शोध विधि

वर्तमान शोध हेतु शोधार्थी द्वारा समस्या की प्रकृति, शोध की मौलिकता व उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण विधि को उपयुक्त मानकर प्रयुक्त किया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा अध्ययन के उद्देश्य के अनुसार विभिन्न विद्यालयों से विद्यार्थियों का चयन किया गया। इसके अंतर्गत सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा के उन विद्यालयों की सूची में से यादृच्छिक विधि से शहरी क्षेत्र के पाँच विद्यालय सहशिक्षा और पाँच विद्यालय एकल शिक्षा तथा इसी तरह ग्रामीण क्षेत्र के पाँच विद्यालय सहशिक्षा एवं पाँच एकल शिक्षा (बालिका विद्यालय) का चयन किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीकें

SPSS पैकेज की मदद से एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के उद्देश्यों और परिकल्पनाओं को साकार करने के लिए वर्णनात्मक विश्लेषण, टी परीक्षण और सहसंबंध को नियोजित किया गया।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

H_1 शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका

शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण में स्थित शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत् छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान एवं मानक विचलन को दर्शाती तालिका

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

स्वतंत्रता के अंश- 298 **0.05 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित मान 1.98**
0.01 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित मान 2.62

व्याख्या

उपरोक्त सारणी में अवलोकन से स्पष्ट होता है, कि शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान 99.83 तथा मानक विचलन 31.26 एवं शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 102.95 तथा मानक विचलन 21.61 प्राप्त हुआ है । इन दोनों समूहों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के विश्लेषण के आधार पर गणना द्वारा ‘t’ का मान 0.89 प्राप्त हुआ है। स्वतंत्रता के अंश 298 के लिए प्राप्त ‘t’ के मान 0.89 है। जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के लिए निर्धारित मान 1.98 से अधिक नहीं है।

अतः परिणामस्वरूप कहा जा सकता है, कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में सार्थकता के परीक्षण के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा स्वीकृत की जाती है।

आरेख

शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण में स्थित शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत् छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान एवं मानक विचलन को दर्शाता आरेख

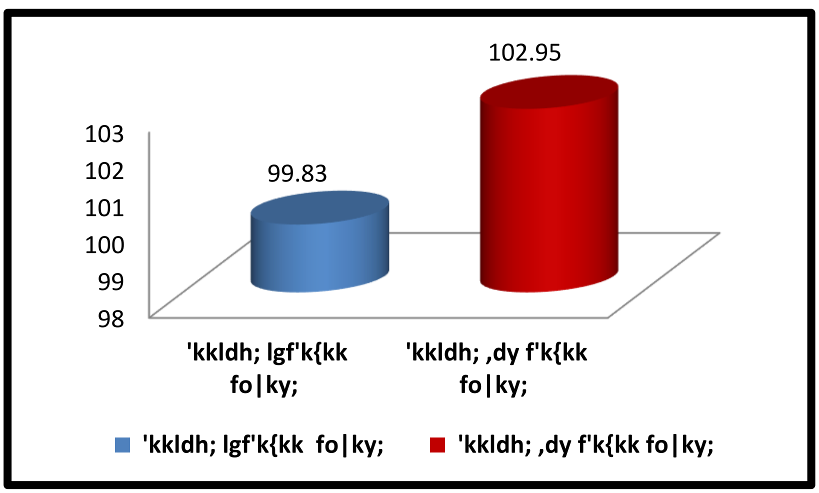

विश्लेषण

आरेख के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान **99.83** तथा मानक विचलन **31.26** एवं शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान **102.95** तथा मानक विचलन **21.61** प्राप्त हुआ है । अतः स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना से प्राप्त अंकों का मान, शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा शिक्षा विद्यालय के मान से अधिक पाया गया।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

H_2 शहरी क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका

समूह	छात्रों की संख्या N	मध्यमान Mean	मानक विचलन SD	मानक त्रृटि	t का मान	सार्थकता स्तर Sig. Value -05
शासकीय सहशिक्षा विद्यालय	75	27.10	5.89	0.95	0.44	सार्थक अंतर नहीं है
शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय	75	26.68	5.54			

शहरी क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत् छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान एवं मानक विचलन को दर्शाती तालिका

स्वतंत्रता के अंश- 148 0.05 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित मान 1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित मान 2.62

व्याख्या

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है, कि शहरी क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान 27.10 तथा मानक विचलन 5.89 एवं शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 26.68 तथा मानक विचलन 5.54 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के विश्लेषण के आधार पर गणना द्वारा 't' का मान 0.95 प्राप्त हुआ है। स्वतंत्रता के अंश 148 के लिए प्राप्त 't' के मान 0.44 है। जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के लिए निर्धारित मान 1.98 से अधिक नहीं है।

अतः परिणामस्वरूप कहा जा सकता है, कि शहरी क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में सार्थकता के परीक्षण के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।अतः परिकल्पना शहरी क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा, स्वीकृत की जाती है।

आरेख

शहरी क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत् छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान एवं मानक विचलन को दर्शाता आरेख

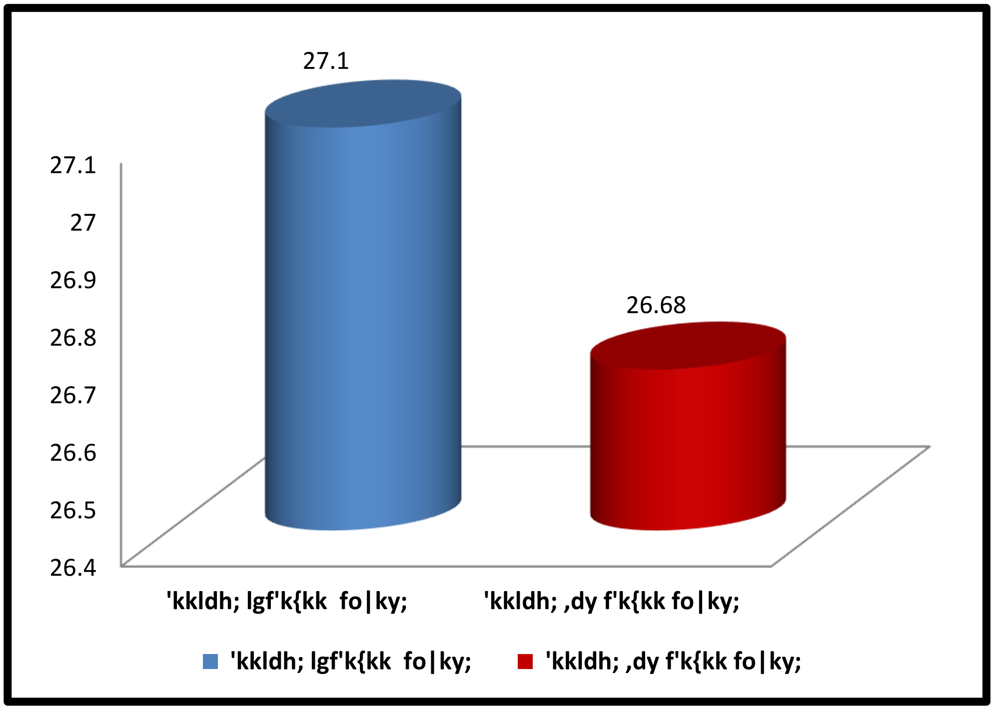

विश्लेषण

आरेख के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान 27.10 तथा मानक विचलन 5.89 एवं शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 26.68 तथा मानक विचलन 5.54 प्राप्त हुआ है। अतः स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र क्षेत्र में स्थित शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना से प्राप्त अंकों का मान, शहरी क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा शिक्षा विद्यालय के मान से अधिक पाया गया।

H_3 ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका

ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत् छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान एवं मानक विचलन को दर्शाती तालिका

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

स्वतंत्रता के अंश- 148 **0.05 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित मान 1.98**

0.01 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित मान 2.62

व्याख्या

उपरोक्त सारणी में अवलोकन से स्पष्ट होता है, कि ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा विद्यालय की

समूह	छात्रों की संख्या N	मध्यमान Mean	मानक विचलन SD	मानक त्रुटि	t का मान	सार्थकता स्तर Sig. Value -05
शासकीय सहशिक्षा विद्यालय	75	27.38	5.67	0.88	0.37	सार्थक अंतर नहीं है
शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय	75	27.72	5.63			

छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान 27.38 तथा मानक विचलन 5.67 एवं शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 27.72 तथा मानक विचलन 5.63 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के विश्लेषण के आधार पर गणना द्वारा 't' का मान 0.37 प्राप्त हुआ है। स्वतंत्रता के अंश 148 के लिए प्राप्त 't' के मान 1.98 है। जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के लिए निर्धारित मान 1.98 से अधिक नहीं है।

अतः परिणामस्वरूप कहा जा सकता है, कि ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में सार्थकता के परीक्षण के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा स्वीकृत की जाती है।

आरेख

ग्रामीण में स्थित शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत् छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान एवं मानक विचलन को दर्शाता आरेख

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

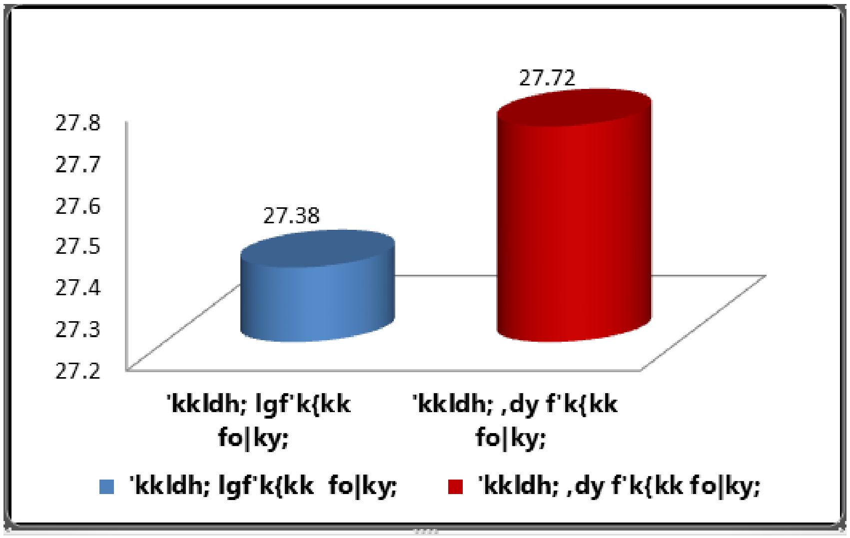

विश्लेषण

आरेख के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना का मध्यमान 27.38 तथा मानक विचलन 5.67 एवं शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 27.72 तथा मानक विचलन 5.63 प्राप्त हुआ है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना से प्राप्त अंकों का मान, ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा शिक्षा विद्यालय के मान से अधिक पाया गया।

परिणाम

H_1 शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में सार्थकता के परीक्षण के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान 27.10 तथा मानक विचलन 5.89 एवं शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 26.68 तथा मानक विचलन 5.54 प्राप्त हुआ है। अतः स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना से प्राप्त अंकों का मान, शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा विद्यालय के मान से अधिक पाया गया।

H_2 शहरी क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में सार्थकता के परीक्षण के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। शहरी क्षेत्र क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना के मध्यमान 27.10 तथा मानक विचलन 5.89 एवं शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 26.68 तथा मानक विचलन 5.54 प्राप्त हुआ है। अतः स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना से प्राप्त अंकों का मान, शहरी क्षेत्र में स्थित शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय के मान से अधिक पाया गया। अतः स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र क्षेत्र में स्थित शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022**

असुरक्षा की भावना से प्राप्त अंकों का मान, शहरी क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा शिक्षा विद्यालय के मान से अधिक पाया गया।

H_3 ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय सहशिक्षा एवं एकल शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना में सार्थकता के परीक्षण के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना से प्राप्त अंकों का मान 27.38 तथा मानक विचलन 5.67 एवं शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 27.72 तथा मानक विचलन 5.63 प्राप्त हुआ है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं के सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना से प्राप्त अंकों का मान, ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय सहशिक्षा शिक्षा विद्यालय के मान से अधिक पाया गया।

परिचर्चा

प्रस्तुत शोध का निहितार्थ इस प्रकार से समझा जा सकता है कि इसकी सहायता से सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों को उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। साथ ही साथ उनको उपयुक्त क्षेत्र चयन के लिए किस प्रकार से अध्ययन करना चाहिए आदि सुझाव भी दिये जा सकते है। प्रस्तुत शोध अध्ययन शैक्षिक दृष्टि से बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध शिक्षक और विद्यार्थी दोनों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध की सहायता से शिक्षक को विद्यार्थी के संदर्भ को जानने का अवसर प्राप्त होगा साथ ही साथ उसको विद्यार्थियों को शिक्षण देने में भी सहायता मिलेगी।

सुझाव

- बालकों में सृजनशीलता के विकास हेतु हर संभव प्रयास किये जाने चाहिए।
- समाज के साथ-साथ विद्यालयों की भी जिम्मेदारी बनती है कि वे बालकों का व्यक्तित्व विकास करें।
- विद्यालयों द्वारा शिक्षण में नवाचारों को अपनाना चाहिए।
- शैक्षिक उपलब्धि के साथ-साथ सृजनशीलता की शिक्षा भी देनी चाहिए।
- शिक्षा व्यवस्था में प्रभावी परिवर्तन लाया जाये। परम्परागत एवं रटन्त विद्या के स्थान पर व्यवहारिक व व्यावसायिक शिक्षा दी जावे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पांडे, यू डी. और सिंह., आर पी. उपलब्ध. धार्मिक विश्वास और धार्मिक प्रथाओं पर सेक्स और संस्कृति का प्रभाव। मनोवैज्ञानिक शोधों का जर्नल। खंड 15. क्रमांक 2, पीपी 49-52, 1971।
- गर्ग, महेशः 'आधुनिक मानववैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन" (1993) हर प्रसाद गर्ग स्टार्टअप प्रकाशक आगरा।
- भार्गव, एम) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण और माप। :7वां संस्करणआगरा (हर प्रसाद भार्गव, 1987
- भाटिया, इराभारत के विभिन्न सामाजिक आर्थिक स् :थिति वाले युवाओं में एनउपलब्धि का एक -अध्ययन, विशेष रूप से उनके शैक्षणिक और व्यावसायिक जीवन के संदर्भ में। मनोविज्ञान में पीएचडी. . थीसिस। आगरा विश्वविद्यालय1980।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022**

- ठाकुर सविताए कम्प्लीट स्टडीज ऑफ दी वैल्यूएज एण्ड स्टडीडेंट ऑफ ट्रेन्ड टीचर, एण्ड इन " : सर्विस टीचर्स इन सेकेन्ड्री लेवल" एमएड0 डिजर्टेशन, इलाहाबाद विश्व विद्यालय, 1979।
- प्रतिभा और मोहन, आशा देव मोहन उपलब्धि प्रेरणा का प्रक्षेपी परीक्षण)1983) मनोवैज्ञानिक निगम। आगरा, राष्ट्रीय
- भट्टाचार्य एवं सोमाली)2014). सिक्यूरिटी इनसिक्यूरिटी फिलींस एण्ड डिप्रेशन अमग एडोलसेन्स ऑफ वरकिंग एण्ड नॉन वरकिंग वूमन, इण्टरनेशनल जनरल्स ऑफ साइंस एण्ड रिसर्च, वो .3(8).1789-1792
- भोसले, एराम .2016). अ स्टडी ऑफ इफैक्टिवनेस ऑफ स्प्रिरिचुअल इन्टेलीजेन्स एनहान्समेंट प्रोग्राम फॉर ट्रेनी टीचर्स द ऑनलाइन जर्नल ऑफ न्यू होरिजन इन एजूकेशन वो .6(1). 1-6.
- चौधरी, निशा, (2008). विशिष्ट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि एवं कार्यदबाव ग्रस्तता का अध्ययन, अप्रकाशित लघु शोध प्रबंवनस्थली विद्यापीठ ., वनस्थली
- गंगल, कुमार, डॉ)महेश .2014). शिक्षक सुरक्षा असुरक्षा की भावना एक सम्प्रत्यय, स्टेडीज, एई.डी . जर्नल ऑफ एज्यूकेशनल, गोरखपुर, वो.3 (2), 80-89
- गोस्वामी, वंदना एवं गंगल, मीनू 2015). अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं अधिगम शैलियों, जर्नल ऑफ मल्टी डिसीपिलनरी रिसर्च, वो .2(1). 59-66.
- गुप्ता, एस) .पी.2008). सांख्यिकीय विधियाँ शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद 309.
- गुप्ता, रेनु एवं वट अर्चना)2016). रिलेशनशिप ऑफ स्प्रिरिचुअल इन्टेलीजेन्स एण्ड वर्क इथिक् ऑफ सैकण्डरी स्कूल टीचसइन्टरनेशनल एजूके .शनल ई जर्नल वो .5(3) 72-80